लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# "संवाद"

## वार्षिक पत्रिका

## तृतीय अंक – सितम्बर, 2021

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
'ए' विंग, तृतीय तल, इन्द्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली – 110002

कोरोना वायरस सुरक्षा नारा

कोरोना से बचें
सही से मास्क पहनें
हाथ धोएं बार बार
निभाएं दो गज की दूरी
जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं

CORONAVIRUS
दो गज की दूरी का रखो ध्यान,
यही है कोरोना का समाधान।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# “संवाद”

## वार्षिक पत्रिका

## तृतीय अंक – सितम्बर, 2021

कार्यालय

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर),
‘ए’ विंग, तृतीय तल, इन्द्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली - 110002

"सरस्वती वन्दना"

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।
तू स्वर की देवी है, संगीत तुझसे ,
हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे ।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे माँ....
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

मुनियों ने समझी, गुनियों ने जानी,
वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी ।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें,
विद्या का हमको भी अधिकार दे माँ....
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

तू श्वेतवर्णी कमल पे विराजे,
हाथों में वीणा, मुकुट सिर पे साजे ।
अज्ञानता के मिटाके अंधेरे,
हमको उजाले का संसार दे माँ....
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तार दे माँ ।

**********

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# "संवाद" 2021

अनुक्रमणिका


| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| माननीय गृह मंत्री जी का संदेश | 6-8 |
| उद्बोधन – महानिदेशक महोदया | 9 |
| उप-निदेशक (प्रशासन) महोदय की कलम से | 10 |
| संपादकीय – श्री मनोज मलिक, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी | 11 |


विभागीय लेखकों की लेखनी से


| क्र. सं. | विषय | रचनाकार/संकलनकर्ता का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1. | अगर यह सच है..... | श्री मनोज मधुकर कस्तूर, व.ले.प.अ. | 13 |
| 2. | सम्मान गैरो मे मिले अपनों का..... | श्री मनोज मधुकर कस्तूर, व.ले.प.अ. | 17 |
| 3. | वो अनुभव मायानगरी मुंबई फिल्मसिटी के | श्री मनोज मधुकर कस्तूर, व.ले.प.अ. | 19 |
| 4. | कर्म | सुश्री मीना कुमारी, निजी सहायक | 23 |
| 5. | वक्त | सुश्री मीना कुमारी, निजी सहायक | 24 |
| 6. | "नौशेरा का शेर"- ब्रिगेडियर उस्मान अली | श्रीमती आरती शर्मा, व.ले.प.अ. | 25 |
| 7. | भारतीय सेना और उनके मानवाधिकारों का हनन | श्रीमती आरती शर्मा, व.ले.प.अ. | 27 |
| 8. | हिंदी-पर्यायों के रूप में यथावत ग्रहीत अंग्रेजी शब्द | श्री राजेश रानल, स.ले.प.अ. | 31 |
| 9. | पिता | डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक | 33 |
| 10. | वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग | श्री राजेश रानल, स.ले.प.अ. | 34 |
| 11. | दोस्ती की ज़रूरत | श्री धर्मवीर, व.ले.प.अ. | 36 |
| 12. | इंसानियत | श्री वेद प्रकाश, व.ले.प.अ. | 38 |
| 13. | बरसात | श्री वेद प्रकाश, व.ले.प.अ. | 39 |
| 14. | सुन्दर वचन | श्रीमती सतिंदर कौर, पर्यवेक्षक | 41 |
| 15. | महामारी और मानसिक स्वास्थ्य | सुश्री आरती, कनिष्ठ अनुवादक | 43 |
| 16. | अभिव्यक्ति है भाषा | सुश्री आरती, कनिष्ठ अनुवादक | 44 |

**अमित शाह**
**गृह और सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**
**AMIT SHAH**
**HOME AND COOPERATION MINISTER**
**GOVERNMENT OF INDIA**

सत्यमेव जयते

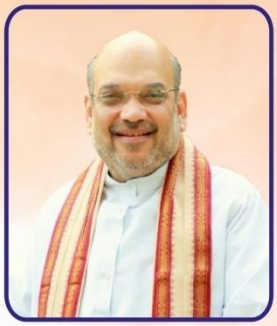

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

**"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"**

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

**"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"**

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

## महानिदेशक महोदया द्वारा उद्बोधन

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है । सम्पादकीय समिति के सभी सदस्यों को इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु उनके कार्य एवं प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ ।

इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह एवं लगाव को प्रोत्साहित करना है । मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के लिए किये गए सम्पूर्ण प्रयास आशापूर्ण परिणाम लायेंगे । वास्तव में, यह एक प्रशंसनीय कार्य है । यह भी आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी ।

पत्रिका की सफलता हेतु शुभकामनायें ।

रिना

(रिना अकोइजम)
महानिदेशक

## उप-निदेशक (प्रशा.) महोदय की कलम से

मैं कार्यालय की हिंदी पत्रिका के तृतीय अंक के विमोचन के लिए अपार हर्ष महसूस कर रहा हूँ । रचनाकारों ने इस पत्रिका में अपनी रचनात्मकता के सभी पहलुओं के माध्यम से अपनी प्रतिभा को उद्घाटित किया है । कार्यालय के कर्मठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों का समुचित पालन किया जा रहा है ।

इस हिंदी पत्रिका में रचनाकारों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है । मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक समिति व रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति इस निष्ठा के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनायें देता हूँ ।

(अजय कुमार कृपाशंकर)
उप-निदेशक (प्रशासन)

## सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण,

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर) दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचना प्रतिभा के माध्यम से अपने मन के भावों को शब्दों के धरातल पर उतारकर नवीनतम एवं श्रेष्ठ रचनाओं को आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करती है । पत्रिका में सम्मिलित किए गए लेख एवं रचनायें सारगर्भित एवं प्रेरणादायी हैं । सरकारी कर्मचारी होने के नाते सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना हमारा नैतिक कर्तव्य है । अतः हमें यह कहने में गर्व है कि हमारा संगठन भी राजभाषा नीतियों को अमल करने में अग्रसर है ।

मैं हृदय से सभी लेखकों का भी आभार प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने रचनायें प्रेषित कर इस पत्रिका का प्रकाशन सम्भव बनाया और साथ ही समालोचकों का, जिनके माध्यम से पत्रिका को बेहतर बनाने का प्रयास किया गया । सभी पाठकों से सहृदय अनुरोध है कि कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव हमें प्रेषित करें । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें ।

(मनोज मलिक)
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

संरक्षक

श्रीमती रिना अकोइजम,
महानिदेशक

श्री अजय कुमार कृपाशंकर,
उप-निदेशक (प्रशासन)

(सम्पादकीय समिति)

सम्पादक

श्री मनोज मलिक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सदस्य

श्रीमती सतिन्दर कौर, पर्यवेक्षक
डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक
श्री नितिन नैनवाल, आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक, ग्रेड-'बी'

डिज़ाईनिंग एवं आवरण

डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक
श्री नितिन नैनवाल, आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक, ग्रेड-'बी'

*आज के इस आधुनिक युग में, हम सभी हर छोटी बड़ी चीज़ों के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल अवश्य करते हैं । जिसमें फेसबुक, वाटसेप्प, इन्स्ताग्राम, आदि शामिल हैं और आये दिन हम जिस पर अपने मित्रों आदि को शुभकामना सन्देश, वीडियो, इत्यादि का आदान प्रदान करते हैं । आज का सोशल मीडिया हम सभी के पास हमारे स्मार्टफ़ोन के साथ हमेशा हमारे साथ रहता है जिसके द्वारा छोटी-छोटी खुशियों के साथ साथ हम सामाजिक बुराइयों को उजागर करने, जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाने और समाज में जागरूकता लाने में भी मदद मिलती है । इसी सन्दर्भ में, मेरा यह लेख एक मजबूर मूक और बधिर औरत की दशा और हमारे समाज में छिपी सामाजिक बुराइयों की तरफ आप सभी का ध्यान आकर्षित करने की छोटी से कोशिश, शीर्षक "अगर यह सच है....." में किया है:-*

## "अगर यह सच है....."

बात कुछ दिन पहले की है मैं ओर दिनों की तरह ही अपने एंड्राइड फ़ोन से फेसबुक पर शेयर किये हुये मजाकिया वीडियोज़ देख रहा था कि मेरी नज़र शुरू हुये एक नए वीडियो पर अचानक रुक गयी, जोकि लगभग तीन से चार मिनट का था । यह विडियो अन्य वीडियोज़ से काफी अलग लगा, शुरू में मुझे लगा की शायद किसी महिला का सोशल मीडिया पर चलने वाले हजारों वीडियो जैसा कोई सामान्य विडियो होगा, पर जैसे-जैसे विडियो आगे बढता जा रहा था मेरे चेहरे और दिमाग में चल रहे भाव एकदम शून्य होते चले जा रहे थे । दरअसल उस विडियो क्लिप में किसी घर या कमरे में बंद शायद एक 30-35 वर्षीया मूक और बधिर महिला अपने ऊपर होने वाले अन्याय और ज़ुल्म को बताने की कोशिश कर रही थी और रो-रो कर अपने हाथ जोड़ कर अपने लिए मदद की गुहार लगा रही थी । वैसे तो हमारे देश में सोशल मीडिया पर शेयर किये गए सभी कंटेंट्स पर सुरक्षा एजेंसीज की पैनी नज़र चौबीस घंटे रहती है और यह भी संभव है की उस महिला की गुहार सुनकर उसे उस यातना से आजाद भी करवा दिया गया हो, परन्तु बाकि उस जैसी सभी मजबूर औरतों का क्या? जो न तो अभी तक सोशल मीडिया की ताकत से वाक़िफ़ है और न ही चारदीवारी से बाहर निकल पायी है, फिर अपने ऊपर होने वाले दैनिक उत्पीड़न के खिलाफ आवाज़ उठाना और अपना हक़ हासिल करना, तो अभी भी भारत के दूरदराज़ के इलाकों में रहने वाली कई महिलाओं के लिए असंभव ही है।महिलाओ के उसी अनजान डर का नाम है कि अगर यह सच है.....

इस छोटे से विडियो में, एक महिला अपने हाथों से इशारे कर करके अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्मो को रोते हुये बयाँ कर रही थी।जिसमें उसके साथ होने वाली हिंसा और असहनीय शारीरिक उत्पीड़न की झलक भी थी।वह अपने हाथों के इशारों से अपने शरीर पर लगे घावों, फटे हुये कपड़ों और मदद की आस में हाथ जोड़-जोड़ कर मानो लगातार भीख सी मांग रही थी।उसके चेहरे पर उभरे जख्मो और सूजी हुई आँखों के आंसुओं ने मेरे मन में आये डरावने विचारों को मानो जैसे कल्पना के पंख देकर, हमारे समाज में छिपी एक ऐसी हकीक़त को उजागर किया है जो हमारे समाज में उपस्थित कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा ही संभव है । उपरोक्त वीडियो में तो शायद एक पढ़ी-लिखी महिला थी, जो परिस्थिति अनुसार अपने फ़ोन में रिकॉर्डिंग करके दूसरे लोगों तक पहुचाने में सफल रही, पर इनके जैसी दूसरी अन्य महिलाओ का क्या जो चाहकर भी बोल नही सकती? जो आज भी शायद कहीं ऐसे ही किसी नरक में क़ैद है? और आज भी हम में से किसी से मदद का इंतज़ार कर रही है? अब सबसे पहले सवाल यह उठता है कि हम ऐसी परिस्थितियों में क्या कर सकते हैं? तो सबसे पहले विचार पुलिस को बुलाने और आसपास के लोगो को एकत्रित करके उस अपराधी को पकडवाने का आयेगा? और हम सभी पुनः अपनी-अपनी जीवनचर्या में व्यस्त हो जायेंगे और फिर जरुरत पड़ने पर अपनी ज़िम्मेदारी निभा कर, अपना कर्त्तव्य निभाते रहने के आपस में वादे करते रहेंगे? पर क्या सिर्फ इतने से हमारे समाज में हो रहे ऐसे अनगिनत अपराध रुक पाएंगे? क्या महिलाओ को ऐसी प्रतारणाओं से मुक्ति मिल सकेगी? तो शायद हमारे पास इसका कोई उत्तर नहीं होगा, चलो मान लेते है कि उपरोक्त विडियो झूठा भी हो सकता है परन्तु उसमें प्रदर्शित परिस्तिथियों को नज़रअंदाज़ बिल्कुल भी नहीं किया जा सकता और करना भी नही चाहिए, क्योंकि हमारी लापरवाही, जागरूकता का अभाव ही हम सभी के बीच मौजूद असामाजिक तत्वों को ऐसे कृत्य कर, बिना किसी सज़ा के सफेदपोश जीवन जीने का निरंतर मौका प्रदान करते हैं ।तो वास्तविकता में ऐसी परिस्तिथियों के लिए कौन जिम्मेदार है? वो औरत या बुरी नियत रखने वाले लोग या खुद हम? इस प्रश्न के विकल्प की तरह लोगों के उत्तर भी अलग-अलग ही होंगे, जो हमें कभी किसी नतीजे पर नहीं पहुँचने देगा, जैसे किसी सर्वेक्षण के उपरांत लोगों की पसंद-नापसंद के बारे में पता चलता है।परन्तु अगर उपरोक्त वीडियो और उसमें छुपा हुआ यह घृणित कृत्य सत्य है तो क्या? अब भी हमें इसे अन्य वीडियो की तरह देख कर भुला देना चाहिए या लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रियाओं के आधार पर जनमत संग्रह कर ठोस कानून की वकालत करनी चाहिए।जैसा पहले से ही हमारे समाज में चला आ रहा है और इस दिशा में निर्भया कांड के बाद हमारे देश में कई कठोर कानून भी बनाये जा चुके है।परन्तु क्या इतना सब होने के बाद भी महिलाओ पर होने वाले अत्याचारों में कोई कमी आई है? तो उत्तर होगा नहीं, बल्कि अपराध काफी बढ़ गए है । क्योंकि अपराधियों ने स्वाभिमान, संस्कृति के नाम पर अपनी दमित इछाओं को महिलाओ से पूरा करवाने के लिए नए नए तरीके ढूँढ लिये है, वो सभी अब पहले से ज्यादा जागरूक और खतरनाक है पर हम सभी अभी भी अपने आप को इतना मजबूत और जागरूक नही बना पाए है कि इन अपराधियों को पकड़ने के साथ साथ पूर्ण समाज में व्यापक स्तर पर, मौजूद हर छोटे-बड़े इंसान को भटकाव से सही मार्ग पर लाकर और उनको गलत संगत और मानसिकता से छुटकारा दिला सके।यह एक निम्न स्तर से लेकर राष्ट्रिय स्तर तक चलने वाली प्रक्रिया है जिसके लिए हमारी सरकारों और जनप्रतिनिधियों को एकमत होकर प्रयास करने की जरुरत है, परन्तु

वर्तमान परिस्तिथियों में तो यह असंभव ही लगता है । क्योंकि अगर ऐसा होता तो शायद आज हमारे देश में भी महिलाओ को समान अधिकार और अवसर मिल रहे होते और सम्पूर्ण विश्व में हमारा देश एक महाशक्ति के रूप में जाना जा रहा होता।पर वास्तविकता तो हम सब जानते है कि देवी की तरह पूजे जाने वाली औरत को हमारे देश कुछ लोगों द्वारा में भोग की वस्तु के रूप में भी देखा जाता है।तब भी क्या हम यूहीं सब कुछ देखते रहे, कि कब हमारे जनप्रतिनिधि इस दिशा में कोई सकारत्मक कदम उठाएंगे और न जाने तब तक देश के कितने छोटे बड़े कोनों में ऐसी कितनी अनगिनत लडकियाँ, महिलाये बंद दीवारों के बीच घुट घुट कर अपने ऊपर होने वाले जुल्म को रोकने की भगवान से प्रार्थना कर करके गुमनामी में ही इस दुनिया को अलविदा कहती रहेंगी? तो इसका उतर क्या है? वे असामाजिक तत्व है जो मानसिक रूप से बीमार और हिंसक है और हम में से ही एक होते है ।फिर क्या हम एक इंसान होकर भी इस बारे में कुछ नही कर सकते और समाज में महिलाओ के ऊपर होने वाले अमानवीय अत्याचारों को यूहीं होते रहने दे? ये भी कब तक, जब तक कोई हमारा अपना इसका शिकार न हो जाये?

वर्तमान समय को देखते हुये, बड़े बुजुर्गो की वो सलाह याद आ रही है कि पडोसी के घर में आग लगी है तो भी मदद के लिए आगे आना चाहिए ताकि वो आग आपके घर तक न पहुँच पाए, फिर महिलायें चाहे हमारे अपने घर की हो या किसी और के घर की, है तो हमारे समाज का ही हिस्सा न, अगर आज अपराधी वहां पहुच सकते है तो कल हमारे घर भी आ सकते है? जब हम जानते है कि अपराधी हमारे बीच में से कोई भी हो सकता है तो क्या हमें अब भी कुछ नहीं करना चाहिए? उपरोक्त पंक्तियों में छुपे डर को युहीं नज़रंदाज़ करते रहना चाहिए? मैंने जबसे वो वीडियो देखा है, मैं रह-रह कर उसमें छिपे सन्देश को नही नज़रंदाज़ कर पा रहा हूँ तो आप सबको भी नहीं करना चाहिए।फिर हम सब मिलकर एक छोटी सी कोशिश तो कर ही सकते है।समाज में छिपी बुराइयों से लड़ने के लिए अच्छे लोगों से मिलकर अपना सामाजिक दायरा बढाने से, अपने सगे संबधियों को धीरे धीरे जागरूक करके, विशेषकर अपने मित्र महिलाओं-संबधियों की सुरक्षा आदि की जानकारी देकर, नवीन तकनीक की मदद से अधिक से अधिक प्रयास करके हम एक कोशिश से शुरुआत तो कर ही सकते है।जिस तरह हमें बचपन में विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का पाठ पढाया जाता था । उसी तरह एक माता पिता के रूप में हम अपने बच्चों को अच्छी परवरिश के साथ साथ लड़कियों, महिलायों का सम्मान करना भी सिखाना चाहिए । ताकि उनके बड़े होने तक यह बुनियाद इतनी मजबूत बन जाये कि कम से कम वो अपने सामाजिक स्तर पर महिलाओ का उत्पीडन रोकने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दे सके । माना कि महिलाओं के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक है परन्तु बच्चों को सही और गलत में फर्क सिखाना भी हर माता-पिता की प्राथमिक जिम्मेदारी है जिसे हमें ही पूरा करना होगा वर्ना क्या पता हम में से ही किसी का कोई बच्चा कल ऐसे ही किसी अपराध में लिप्त हो जाये और हम सिवाय पछताने के तब कुछ न कर सके | इन परिस्थितियों में हमें सिर्फ दुसरो की कोशिश का ही इंतजार नहीं करते रहना चाहिए बल्कि स्वयं भी विचार कर प्रयास करना चाहिए । क्या पता आज भी हमारे आस पड़ोस में न जाने कितनी महिलायें अपनी आजादी के लिए आपकी ही एक कोशिश के इंतज़ार में हो? वैसे तो हम सभी अपने अपने जीवन में काफी व्यस्त रहते है पर क्या हमें समाज में छिपी बुराइयों को देखकर यूं ही

अपनी आँखें फेर लेनी चाहिए । हो सकता है कि उपरोक्त वीडियो में किसी कलाकार ने अपनी प्रतिभा साबित करने के लिए, खुद को प्रसिद्ध करने के लिए एक नाटय रूपांतरण किया हो? परन्तु अगर यह सच है तो उन महिलाओं का क्या, जो सच में ऐसे ही किसी नरक में आज भी झुलस रही है? प्रतिदिन शारीरिक उत्पीडन और शोषण की शिकार हो रही हों और उनकी उस नरक से मुक्ति की उम्मीद भी धीरे धीरे टूट रही हो, सोचिये अगर वो महिला मानसिक रूप से बीमार या दिव्यांग हो तो हम उपरोक्त हालात में उसकी दशा की कल्पना भी नहीं कर सकते।तो क्या हमें तब भी कोई कोशिश, कोई प्रयत्न नही करना चाहिए? सोचिये अगर आपका कोई अपना ऐसी परिस्तिथियों में फँस जाये तो तब आपके ऊपर क्या गुजरेगी? अगर यह किसी आपके अपने का सच हो तो क्या तब भी आप कोई प्रयास नहीं करेंगे...???? मेरी आप सब से यही गुजारिश है की इस बारे में एक बार विचार अवश्य जरुर करे की, अगर यह सच में सच है.....।।

*(समाप्त)*

स्वरचित
(मनोज मधुकर कस्तूर)
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), नई दिल्ली

आज अपने ऑडिट विभाग मे सितम्बर 2008 से कार्य करते हुये, मुझे 12 वर्ष से अधिक का समय हो चुका है। इस दौरान ऊपर वाले के आशीर्वाद से मैंने काफी कुछ हासिल भी किया,पर जब कभी भी पीछे वक्त मे मुड़कर देखता हूँ तो कई चेहरे आज भी नज़रों मे साफ़ नज़र आते है मानो जैसे अभी कल की ही बात हो | उन्ही कुछ नामों मे सबसे पहला नाम आता है, शुभांगी मैडम का, जो आज भी ए. जी. ऑफिस, मुंबई मे कार्यरत हैं जिनकी सींची हुयी बुनियाद पर ही, मैं आज आप सबके बीच यहाँ तक पहुच पाया हूँ | उन्हीं शुभांगी मैडम के प्रति अपना आभार मैने स्वयं लिखित पंक्तियों के रुप में व्यक्त करने का प्रयास किया है और आशा है कि यह आप सबको भी पसंद आएँगी:-

"सम्मान गैरो मे मिले अपनों का"

एक प्यारी सी पेर्सोनालिटी लिए चेहरे पर सदा मुस्कान,
जिसे देखकर रह जाए सभी तकलीफें हैरान,
अपने ग़मों को छुपाकर, दुसरो के ग़मों को दूर करती है,
खुद ने देखा जैसा वक्त, उसका सबक मेरे जैसे नादानों को देती है,
कमी नहीं है इस दुनिया मे ऐसे अच्छे इंसानों की,
बस ज़रूरत है वक्त पर किसी अच्छे की आगे आने की,
इस दुनिया मे खुशनसीब नहीं होता हर कोई,
ठोकरें लगती रहती है पर सँभालने वाला नहीं हर कोई,
खुशकिस्मत होता हैं वो शख्स जिसे आप जैसा कोई मिलता है,
तकलीफें मुश्किल नहीं रहती और कॉन्फिडेंस लेवल भी बढता है,
मैं तो शुक्रिया भी नहीं कह सकता, जैसे आपने मुझे संभाला था,
शब्दों को जानता हूँ और शब्दों का तोहफा ही सबको दिया था,
सम्मान करता हूँ दिल से, कम नहीं समझता आपको अपनी मदर से,
छोटा हूँ उम्र से.... इसलिए डायरेक्ट प्रार्थना है उस रब से,
आपके जीवन मे हो इतनी खुशियाँ की गम के लिए कोई जगह न हो,
स्वास्थ्य, आनंद और मेहनत मे उम्र की कोई बाधा न हो,
मैं थोडा सा नादान थोडा सा शैतान हूँ, पर दिल से ईमानदार हूँ,
हुयी हो मुझसे कभी कोई गलती, उसके लिए अब भी शर्मसार हूँ,
अपना स्नेह भरा वो आशीर्वाद सदा मुझे पर युहीं बनाये रखना,
जिन्दगी यूँहीं चलती रहेगी, पर मुझसे कोई कभी नाराजगी मत रखना...,

इस सफ़र की शुरुआत आप थी जो आज एक दशक से आगे निकल चुका हैं,
अब तक गैरों में अपने तो कई मिले है पर कोई आपसा नहीं मिला,
जिसकी फूंकी हुयी आत्मविश्वास की मशाल आज भी यूहीं कायम है,
सफ़र तो बहुत लम्बा है पर आपसे मिला पहला सम्मान आज भी कायम है||

*(समाप्त)*

*मैं यह सत्यापित करता हूँ कि उपरोक्त विषयक रचना कहीं से चुराई नही गयी है और मौलिक एवं अप्रकाशित रूप से मेरे द्वारा स्वलिखित हैं |*

स्वरचित
(मनोज मधुकर कस्तूर)
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), नई दिल्ली

"वो अनुभव मायानगरी मुंबई फिल्मसिटी के....."

दोस्तों बात आज से लगभग ग्यारह साल पहले सन् 2009 की है जब मैं अपने मुंबई स्थित कार्यालय मे तैनात था l उस दौरान मुझे अपने एक मित्र श्री रविंदर कुमार के सौजन्य से एक बार मायानगरी मुंबई मे गोरेगांव स्थित फिल्मसिटी की सैर करने का मौका मिला था l एक आम आदमी की तरह मेरे भी फिल्मों के बड़े-बड़े हीरो-हेरोइन को सामने से देखने, उनके साथ फोटो खिंचवाने और फिर अपनी मित्र मंडली मे शेखी मारने का लाइफटाइम वैलिडिटी वाले ऑफर जैसे ढेर सारे छोटे-छोटे परन्तु रंगीन सपने थे l ऊपर से मुझे फिल्मसिटी मे घूमने का एक नहीं बल्कि दो-दो दिन का निमंत्रण प्राप्त हुआ था, जिससे मेरे सपनो को मानो नए बिलकुल ब्रांडेड पर (मतलब विंग्स) से मिल गए हो, तो क्या मेरे वो सपने पूरे हुये, क्या मैं उन बड़े-बड़े फ़िल्मी सितारों के साथ फोटो लेकर अपने दोस्तों पर शेखी मार पाया? तो चलिये मेरे साथ इन सवालों के जवाब ढूँढने मेरे एक और रोचक मजेदार सफ़र पर, जिसका शीर्षक मैंने दिया है 'वो अनुभव मायानगरी मुंबई फिल्मसिटी की...'|

बात मेरे मुंबई कार्यकाल के वर्ष 2009 की है, मेरे मित्र श्री रविंदर कुमार गोरेगांव स्थित महाराष्ट्र फिल्म, स्टेज एंड कल्चरल डेवलपमेंट कारपोरेशन का ऑडिट कर रहे थे, जिसका कार्यालय मायानगरी मुंबई की पहचान फिल्मसिटी में ही स्थित था l जैसे ही मुझे यह ज्ञात हुआ की मेरे मित्र फिल्मसिटी का ऑडिट कर रहे है, उसी पल मैंने यह ठान लिया था की मैं अपने हाथ आये इस मौके को निकलने नहीं दूंगा l मैंने पूरी प्लानिंग के साथ अपने मित्र से फिल्मसिटी आने की गुज़ारिश की, जिसे मेरे मित्र ने तुरंत स्वीकार कर लिया और शनिवार के दिन (जब हमारा कार्यालय बंद, परन्तु फिल्मसिटी कार्यालय चालू रहता है) लंच के आस पास ऑफिस आने के लिए मुझे न्योता दिया l जिसे मैंने तुरंत सहर्ष स्वीकार कर लिया था l सब कुछ प्लान के मुताबिक एकदम बढ़िया चल रहा था और मैं मुंगेरीलाल की तरह अपने हसीन सपनो को पूरा होते हुये देख रहा था, कि मैं कैसे बड़े-बड़े फिल्मस्टार्स के साथ फेस टू फेस ढेर सारी फोटो खिचवा रहा हूँ?, मुझे एक वीआईपी की तरह कहीं भी आने जाने से कोई नहीं रोक रहा है? और कैसे वापिस घर लौटने पर मैं अपनी मित्र मंडली को अपनी खिचवाई हुई एक-एक फोटो दिखा रहा हूँ? और मेरे सारे मित्र कैसे आश्चर्य भरी निगाहों के साथ मेरी नमक मिर्च लगाकर सुनाई जा रही बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे है? इन सब बातों और अपने दोस्तों पर जमते रॉब को सोच-सोच कर, अब मेरे लिए शनिवार तक का इंतज़ार बहुत मुश्किल हो रहा था l मैं एक-एक दिन ऐसे गिन रहा था मानो जैसे कोई प्रेमिका अपने प्रेमी का इंतज़ार कर रही हो l आखिर हो भी क्यूँ न, सपनो को पुरे होते देखना किसी प्रेमिका से मिलने से भला कम होता है क्या?

आख़िरकार वो शनिवार का दिन आ ही गया, तारीख 31 जनवरी 2009! सुबह से ही मैं पूरे मूड में था, अपने घर के सारे छोटे-मोटे काम मैं गाने गुनगुनाते हुये फटाफट किये जा रहा था l उस दिन मेरे मूड को देखकर मेरी छोटी मराठी बहना सवी, अपने भईया से टूटी-फूटी हिंदी मे पूछती है – भईया आज तो बहुत मस्त लग रहे हो क्या बात हुआ? कोई मिल गया क्या मुंबई मे आपको, मेरे को भी नहीं बताएँगे...

पर उसके दिल्ली वाले भईया तो आज ज़मीन पर थे ही नहीं l वो तो न जाने आज किस किस के साथ पहले से ही मिल चुके है, कई फोटो खिचवा चुके है l क्या शाहरुख़, क्या सलमान और क्या अमिताभ जी, कोई भी बड़ा नाम नहीं बचा था लिस्ट मे l  सबने मनोज जी को न सिर्फ अपना कीमती समय दिया बल्कि उन्हें फिर से मिलने के लिए न्योता भी जो दिया था l अपने को मिले इस सम्मान पर मनोज जी के कदम आज ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे l फिर भला भोली-भाली सवी की बातें कैसे उसे सुनाई देती? वो तो आज अपनी ही दुनिया मे खोया हुआ था l अपना सारा काम जल्दी से ख़तम करके, आंटी जी के हाथों का बनाया स्वादिष्ट नाश्ता करके वो अपने भांडुप वाले घर से गोरेगांव तक पहुचने के रास्ता तलाश कर रहा था कि कौन से स्टेशन तक मुंबई लोकल से फिर आगे बस से या ऑटो से कैसे अपनी मंजिल पर बिना वक्त गँवाए, एक अनुशासित होनहार व्यक्ति की तरह समय पर पहुँच कर अपने ख्यालीराम के सपनो को इस मायानगरी मे जल्द से जल्द जीना चाहता था l आखिरकार लंच के वक्त तक मैं फिल्मसिटी के गेट पर पहुच गया था, जहाँ पर पहले से ही मेरे मित्र मुझे अन्दर ले जाने के लिए खड़े थे l वहां ऑफिस मे रविंदर के साथ मेरे अन्य साथी लोनारकर जी, ए.के. सिंह और गायधने जी भी मौजूद थे l सबसे एक छोटी मुलाक़ात के बाद मैं ऑफिस के बाहर आकर खड़ा हो गया था, जहाँ एक 'ट्रम्प कार्ड' नामक किसी हिंदी फिल्म की शूटिंग चल रही थी, जिसके न तो हीरो का न उसकी हेरोइन का किसी को अता पता था (पर सच कहूँ, एक स्ट्रगलर के लिए अपने करियर के लिए मायानगरी मे मिला एक छोटा सा मौका भी बहुत कुछ होता है) l पर कुछ देर रुक कर मैंने लाइफ में पहली बार लाइव शूटिंग ज़रूर देखी, सच कहूँ मेरी शुरुआत इतनी बोरिंग होगी, यह मैंने सपने मे भी नहीं सोचा था लेकिन मैं पूरे जोश मे था l जल्द ही मैंने अपने साथियों के साथ फिल्मसिटी मे मौजूद एक रेस्टोरेंट मे मिलकर मराठी लंच पूरा किया और अपने यादों भरे सफ़र पर निकल पड़ा l फिल्मसिटी के सफ़र पर हमे दो टूर गाइड मिले थे उनमे पहले श्री माने (जो फिल्मसिटी मे ही टूरिस्ट गाइड थे) और दूसरी मैडम थी (जिनका मुझे नाम तो याद नहीं पर वो फिल्मसिटी ऑफिस मे ही कार्य करती थी और इत्तेफाक़ से भांडुप मे हमारे साथ वाली बिल्डिंग मे ही रहती थी)| दो गाड़ीयों से घूमते हुये हमने हिंदी सीरियल 'मायका' और कुछ मराठी सीरियलस की लाइव शूटिंग, फिल्मो और नाटकों के कई मशहूर स्पॉट्स देखे, जो हकीक़त मे फिल्मसिटी स्टूडियोज़ थे, जो अलग अलग फिल्म्स, सीरियल मे बार-बार दिखाई जाते थे जैसे फिल्मसिटी का मशहूर टेम्पल स्टूडियो (न जाने कितनी हिंदी फिल्मो मे दिखाया गया है उसे), भूतबंगला गार्डन, डेथ वैली, हेलीकाप्टर से उतारते और चढ़ते सीन के लिए हेलिपैड, अन्दर ही बना हुआ सुभाष घई फिल्म इंस्टिट्यूट, तारक मेहता का उल्टा चश्मा सीरियल का परमानेंट शूटिंग स्टूडियो, आदि घूमे और कई यादगार फोटोज भी लिए (जो बाद मे सारे मुझसे गलती से डिलीट भी हो गए) l इस यादगार सफ़र के दौरान मुझे एक्टर विश्वजीत जी (जो उस वक्त अक्सर विलेन की भूमिका निभाते थे) और रामानंद सागर की रामायण मे शूर्पनखा का किरदार निभाने वाली रेनू खानोलकर जी को भी देखने का मौका मिला l इसके साथ ही हमने महाभारत का 25 वर्ष पुराना सेट, खंडाला घाट और अन्य रोड साइट्स देखी, जहाँ अक्सर फिल्म्स के एक्सीडेंट सीन फिल्माए जाते थे l हमे घूमते-घूमते अब शाम हो रही थी और अब वापिस घर लौटने का समय हो रहा था l वैसे तो यादगार के लिए मेरे पास बहुत सारे खुबसूरत पल थे परन्तु नच बलिये' सीज़न 4 का ग्रैंड फिनाले के दो वीआईपी पासों (विद डिन्नर) ने इन पलों मे और चार चाँद लगा दिए गए थे l जो हमारे टूरिस्ट गाइड्स ने निमंत्रण स्वरुप हम दोनों को दिए थे l ये ग्रैंड फिनाले अगले दिन रविवार यानी एक फ़रवरी 2009 को फिल्मसिटी मे ही होने वाला था l यह सुनकर मैं और रविंदर एकदम उत्साहित हो गए और अब हमे बिलकुल भी थकान महसूस नहीं हो रही थी और कल वापिस आने की फीलिंग के साथ हम पहले ऑटो और फिर बस से सफ़र करते हुये अपने अपने घर वापिस लौट आये l वैसे तो पहले दिन का अनुभव मेरे अरमानों के एकदम विपरीत

था पर नच बलिये के ग्रैंड फिनाले के पास मिलने के बाद तो ऐसा लग रहा था जैसे सच मे मेरे सपने कल पूरे होने जा रहे है l इस तरह एक रात और मैं यूहीं ख्यालीराम के हसीन सपने देखते हुये, जिसमे मैं कभी फराह खान तो कभी अर्जुन रामपाल और तो और करिश्मा कपूर के साथ भी फोटो खिचवाते हुये, बातें करते हुये इतरा रहा था (जो उस वक्त नच बलिये की जज थी) l इस तरह सपनो मे देखते देखते वो रात कब पूरी हो गयी पता ही नहीं चला |

अगले दिन सुबह जल्द ही मैंने घर के सारे काम ख़त्म कर, बाहर घुमने के बहाने मार्किट मे अपने लिए नए कपडे खरीदने आया था l क्योंकि आज की शाम बहुत स्पेशल जो थी और मैं भी किसी से कम नहीं दिखना चाहता था l शाम होते ही मैं और रविंदर ऑटो से फिल्मसिटी पहुच गए थे, पर वहां कोई स्पेशल चहल-पहल नहीं थी सब शांत था जबकि हम तो सोच रहे थे की ग्रैंड फिनाले वाले दिन चारों तरफ चमक-धमक होगी (कैमरा, लाइट और ढेर सारी भीढ़) जैसा अक्सर टीवी पर दिखाया जाता है l हम धीरे-धीरे अन्दर निर्धारित स्टूडियो की तरफ बढ़ ही रहे थे कि आईसीआईसीआई एटीएम के नजदीक हमे पहला जाना पहचाना चेहरा एक्टर कृष्णा (जो मशहूर एक्टर गोविंदा जी के भांजे भी है) नज़र आये और उसके बाद कई सारे टीवी सीरियल एक्टर और एक्ट्रेस दिखी l सब हमें देखते हुये ऐसे निकल गए जैसे हम वहाँ थे ही नहीं... (ऐसी बेज्ज़ती तो मेरी कभी सपने मे भी नहीं हुयी थी) l पर खुद को सँभालते हुये हम दोनों स्टूडियो के पास ही पहुँचे थे की तभी हमारे आगे से फराह खान, अर्जुन रामपाल और करिश्मा कपूर अपनी अपनी बसेस से उतर कर वीवीआईपी लाउन्ज की तरफ चले गए और मैं सिवाय उन्हें देखते रहने की अलावा कुछ नहीं कर पाया (मुझे क्या पता था की बाद मे उनकी ये एक झलक, मेरे साथ उनकी आखिरी झलक साबित होगी) l तभी याद आया की अभी तो ग्रैंड फिनाले शुरू होने मे वक्त है, आगे और भी मौके आयेंगे l फिर धीरे-धीरे वहां सब टीवी एक्टर्स पहुचने लगे जिनमे नच बलिये की सभी ग्यारह जोडियाँ और शो होस्ट करने वाले हितेन और गौरी तेजवानी भी थे l उन जोड़ियों मे से कुछ नाम जैसे जसपाल भट्टी और सविता भट्टी, अभिजीत सावंत (इंडियन आइडल फर्स्ट विनर) और अन्य गेस्ट्स जैसे शिवानी कश्यप आज भी मुझे धुंधली यादों मे याद है l हम धीरे-धीरे स्टूडियो के मेन गेट पर पहुच चुके थे और सभी सेलिब्रिटीज की तरह अन्दर जाने के लिए आगे बढ़ ही रहे थे कि हम दोनों को वाचमेन ने गेट पर ही रोक लिया जबकि बाकी सभी अन्दर चले गए l उसके इस व्यवहार पर हम दोनों काफी नाराज़ हुये, हमने उसे अपने वीआईपी पास भी दिखाए, पर वो था की कुछ सुनने को ही तैयार नहीं था l फिर किसी तरह रविंदर ने ऑफिस वाली मैडम से उसकी बात करवाने के बाद, हमे अन्दर जाने की एंट्री मिली l अब तक लगभग साढ़े आठ बज चुके थे और अब हमें भूख भी लगने लगी थी l पर ग्रैंड फिनाले क्या खाने का भी दूर-दूर तक कोई नामोनिशान नहीं था l हम अन्दर दाखिल हो चुके थे, शूटिंग वाली सारी सीट्स खचाखच भरी हुयी थी और हमारे जैसे वीआईपी पास वाले कई लोग जहाँ तहाँ किनारों मे, कोनो मे खड़े हुये बस ग्रैंड फिनाले शुरू होने का इंतज़ार कर रहे थे| जो कतई ग्रैंड नहीं था कोई स्पेशल स्टेज परफॉरमेंस नहीं हुयी थी अभी तक l घड़ी मे दस बज चुके थे पर अभी तक हमें बैठना तक नसीब हुआ था, टाँगे दर्द करने लगी थी ऊपर से ग्रैंड फिनाले हमारे लिए फ्लॉप फिनाले बनता जा रहा था l बिलकुल बोरिंग, उस वक्त हमारी हालत भीड़ मे दबे हुये उस इंसान जैसी थी जो किसी नेता की रैली मे इस उम्मीद से आता तो है कि नेताजी उसे जरुर पहचान लेंगे पर, पहुचने पर वो ऐसे एक किनारे कर दिया जाता है जहाँ उसके जैसे हजारों पहले से लाइन्स मे अपना अपना इंतज़ार कर रहे हो l ऐसे मे एक इंसान की मौजूदगी किस को दिखती है, उसके लिए तो अपना वजूद संभालना ही मुश्किल हो जाता है l वही हाल इस वक्त हमारा भी था (भीड में और स्टेज पर लाइट दिखाने की वजह से हम भी औरों की तरह अँधेरे मे जो खड़े थे) | किसी एक्टर एक्ट्रेस के साथ फोटो खिचवाना तो दूर वो तो दोबारा सामने से देखने को भी नहीं मिले l सारे सपने एक-एक करके चूर-चूर हो रहे थे और

ऊपर से भूख भी बड़ी जोरो से लग रही थी l अब रविंदर काफी बोर हो चुका था और मेरे अरमानों पर भी पानी फिर चुका था l हम दोनों लगभग साढ़े दस बजे फिल्मसिटी से बाहर निकल गए, अँधेरे का वक्त और फिल्मसिटी की खुली जगह की वजह से हम दोनों को वापिस रास्ते मे थोड़ी थोड़ी ठण्ड भी लग रही थी l लगभग ग्यारह बजे के आसपास हम भांडुप पहुचे और एक निराश हारे हुये खिलाडी की तरह, घर जाने से पहले भांडुप वेस्ट स्थित रत्ना रेस्तौरेंट मे बैठ कर हम दोनों एक दूसरे को सांत्वना दे रहे थे| रविंदर कह रहा था की एकदम बकवास था ग्रैंड फिनाले और मैं भी अपनी भड़ास निकालने के लिए उसकी हाँ मे हाँ मिला रहा था (क्योंकि मेरे सारे सपने, मेरे नए कपडे, मेरे फ़ोन की फुल चार्ज बैटरी, सब कुछ रखा का रखा रह गया था) l इसलिए मैं बार-बार अपने आप को समझा रहा था कि अंगूर खट्टे है... पर यह नहीं अपना पा रहा थी कि इस दुनिया मे एक आम इंसान की तरह मेरे भी सपने अधूरे थे क्योंकि हम अपनी वास्तविकता को जानते हुये भी खुद को कुछ ज्यादा ही स्पेशल जो समझने लगते है l फिर भी मेरा मन यह सच मानना ही नहीं चाहता था और सच को स्वीकार करने की बजाय अपने गमों पर मरहम लगाने के लिए (अपने जीवन मे पहली बार)एक खानदानी रईस की तरह बीयर को अपने गले से लगाया l और धीरे-धीरे अपने मुंगेरीलाल कहो या ख्यालीराम के हसीन सपनो एक एक पेग की तरह अपने गले के नीचे उतारता चला गया l क्योंकि घर जाकर मुझे अपनी छोटे भाई-बहन को रोचक किस्से जो सुनाने थे, जो रात के इस वक्त भी जागते हुये मेरे घर पहुचने का इंतज़ार कर रहे थे l घर पहुचकर मैंने उन्हें कुछ मनगढ़ंत किस्से भी सुनाये और उनका दिल रखा पर, तब से लेकर आज तक मैंने अपने सपनो को हकीक़त के साथ जीने पर प्राथमिकता दी है पर यह दिल है न की मानता ही नहीं l एक नए दिन, नयी जगह पर फिर से खुद को किसी राजा की तरह देखते हुये उन रंगीन सपनो की दुनिया मे खो सा जाता है l जहाँ पहुच कर हर आम इंसान कुछ पलों के लिए सही पर सच मे राजा ज़रूर बनता होगा l मित्रों उस दिन के बाद से मैंने कभी किसी वीआईपी पास के लिए कोशिश नहीं की, ताकि फिर से मेरे अन्दर के दबे हुये मुंगेरीलाल वाले और ख्यालीराम की तरह हसीन हकीक़त से कोसों दूर वाले सपने फिर से कहीं जिन्दा न हो जाये? मायानगरी मुंबई के इतने वीआएपी अनुभवों के बाद तो बिलकुल भी नहीं, पर आप सोच रहे होंगे सपने देखने मे क्या गलत है? हाँ कुछ भी गलत नहीं है बस अगली सुबह मम्मी की डांट खाते हुये उठकर यह महसूस करना की धत् तेरे की मैं फिर से वो वाला सपना (जहाँ सब कुछ हीरो यानि आपकी मर्जी से होता है) देख रहा था..... और बार बार अपने को युहीं सांत्वना देना कि कब तक मेरे जैसा इंसान ऐसा बर्दाश्त करता रहेगा? हम भले ही फिल्म स्टार नही पर, भाई! मेरे जैसे लोगों की भी आखिरकार समाज में कुछ इज्ज़त है या नहीं....?

*(समाप्त)*

*मैं यह सत्यापित करता हूँ कि उपरोक्त विषयक रचना कहीं से चुराई नही गयी है और मौलिक एवं अप्रकाशित रूप से मेरे द्वारा स्वलिखित हैं|*

स्वरचित

(मनोज मधुकर कस्तूर)

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), नई दिल्ली

## कर्म

1) कर्म का लेख मिटा न सके कोई और ।
चाहे कोई लगा ले कितना भी जोर ॥
2) जीवन तेरा है यहाँ पर बहुत ही अनमोल ।
मुड के नहीं आना फिर इस ओर ॥
3) जीवन तो पल का है एक झूठा सपना ।
यहाँ पर तू हर पल भाचकर चलना ॥
4) जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पडेगा पाना ।
तेरा कर्म ही एक दिन तेरे आगे आ जाना ॥
5) तन, मन, धन से किसी के काम तू आजा ।
सबके दिलों में अपनी जगह तू बना जा ।
6) यहाँ पर न कुछ है तेरा ना कुछ है मेरा ।
जीवन है यहाँ पर बस एक रैन बसेरा ॥
7) सब कुछ छोड़कर संसार से पडेगा जाना ।
कर्म की कमाई को ही साथ है लेकर जाना ॥
8) सुख-दुःख ही तो है हमारे कर्मों की छाया ।
यही बात इंसान अभी तक समझ क्यूँ नहीं पाया ॥
9) जीवन में क्या खोया और क्या हमने है पाया ।
कर्मों का किया ही तो हम सबके आगे है आया ॥
10) जीवन में करता जा हर पल तू नेक काम ।
ना जाने कौन सा कर्म हो जाए तेरे मेहरबान ॥

(स्वरचित)
सुश्री मीना कुमारी
निजी सहायक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खाद्य, कृषि एवं जल संसाधन), दिल्ली

## "वक्त"

वक्त चलता ही जाए,
हाथ किसी के न आए,
कभी हँसाए कभी ये रुलाए,
वक्त अनेक रंग दिखाए,
राजा से रंक ओर रंक से राजा बनाए,
वक्त अच्छे-अच्छों को नाच नचाए,
पल-पल ये बीता जाए,
वक्त कभी लौट कर ना आए,
यादें अपनी छोड़ता ये जाए,
वक्त जैसा भी हो गुज़र ये जाए,
वक्त कभी ये तेरा तो कभी मेरा हो जाए,
वक्त की कीमत को जो समझ जाए,
उसका बेड़ा पार हो जाए,
वक्त पर गुमान जो करे,
वक्त उसे कभी माफ़ ना करे l

(स्वरचित)
सुश्री मीना कुमारी
निजी सहायक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खाद्य, कृषि एवं जल संसाधन), दिल्ली

"नौशेरा का शेर"- ब्रिगेडियर उस्मान अली"

ब्रिगेडियर उस्मान अली भारतीय सेना के एक अदम्य वीर और साहसी सेना अधिकारी थे । स्वतंत्र भारत को जब 1948 में पहली बार युद्ध का सामना का करना पड़ा तब उन्होंने सारी बाधाओं और विपरीत स्थितियों का सामना करते जम्मू कश्मीर के नौशेरा (झांगर) क्षेत्र में दुश्मन को करारी परास्त दी । एक सच्चे देशभक्त और युद्ध नायक के रूप में उनकी शौर्य गाथा, भारतीय सेना के स्वर्णिम इतिहास में सदा अंकित रहेगी ।

15 जुलाई 1912 को उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के बीबीपुर में जन्मे मोहम्मद उस्मान एक पुलिस अधिकारी के बेटे थे । वे बचपन से ही एक साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ बालक थे l उनके इन गुणों परिचय एक घटना से मिलता है जब बारह साल की उम्र में वे एक डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए कुएं में कूद गए । उनके पिता चाहते थे कि वे सिविल सर्विसेज में शामिल हों, लेकिन वे सेना में शामिल होना चाहते थे और अपने फैसले पर अड़े रहे । अपनी असाधारण योग्यता प्रदर्शित करते हुए तत्कालीन ब्रिटिश सेना में चयनित हुए l

ब्रिटिश सेना में एक वर्ष तक सेवा करने के बाद, उन्हें बलूच रेजिमेंट में कमीशन किया गया और उन्होंने अप्रैल 1945 से अप्रैल 1946 तक 10 वीं बलूच रेजिमेंट की 14 वीं बटालियन की कमान संभाली । उनके पास ऐसे अनुकरणीय नेतृत्व गुण थे कि बहुत कम समय में वह ब्रिगेडियर के पद तक बढ़ गए ।

सन 1947 में देश का विभाजन होने पर उन्हें तत्कालीन पाकिस्तानी सरकार ने पाकिस्तानी सेना प्रमुख का पद प्रस्तावित किया लेकिन उन्होंने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और भारतीय सेना के साथ काम करना जारी रखा । जब बलूच रेजिमेंट पाकिस्तान गई, तो उसे डोगरा रेजिमेंट में स्थानांतरित कर दया गया ।

जनवरी 1948 में पाकिस्तान ने नौशेरा सेक्टर पर हमला किया, जो जम्मू-कश्मीर में एक अत्यधिक रणनीतिक स्थान था। ब्रिगेडियर उस्मान अली ने दुश्मन को मुहतोड़ जवाब देते हुए पलटवार

किया और नौशेरा क्षेत्र का सफलतापूर्वक बचाव किया । भारतीय पक्ष के जहां 33 जवान शहीद हुए वहां पाकिस्तान को 900 से अधिक मृतकों का भारी नुकसान उठाना पड़ा । नौशेरा क्षेत्र की रक्षा करने के लिए ब्रिगेडियर उस्मान अली को "नौशेरा के शेर" का शीर्षक दिया ।

जिस तरह से ब्रिगेडियर उस्मान ने अदम्य साहस दिखाते हुए अपनी सेना की टुकड़ी के साथ नौशेरा का पाकिस्तानी आक्रांताओं से बचाव किया, उससे पाकिस्तान बहुत व्यथित हो गया और उसने ब्रिगेडियर उस्मान पर 50,000 रुपये का इनाम घोषित किया, जो उस समय (यानी लगभग 70 दशक पहले) एक खगोलीय राशि थी ।

इस असफल प्रयास के बाद बुरी तरह से परास्त दुश्मन देश ने भारी बमबारी के साथ फिर से नौशेरा सेक्टर के झंगर क्षेत्र पर हमला किया। झंगर के इस बचाव के दौरान ब्रिगेडियर उस्मान बुरी तरह से घायल हो गए और भारत माँ की रक्षा करते हुए इस वीर सपूत ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए । अंतिम सांस लेने से पहले उन्होंने अपने सैनिको को ये निर्देश दिए ,"मैं मर रहा हूं, लेकिन जिस क्षेत्र के लिए हम लड़ रहे हैं, उसे न जाने दें...। भारत को उम्मीद है कि सभी अपना कर्तव्य निभाएंगे । जय हिंद।" ये ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान के शब्दों में एक हस्ताक्षरित क्रम में "कॉमरेड्स ऑफ़ 50 (आई) पैरा ब्रिगेड के लिए अंतिम शब्द थे ।

ब्रिगेडियर उस्मान आजादी के समय भारतीय सेना में सेवा देने वाले केवल 18 ब्रिगेडियर में से एक थे। उन्हें सक्रिय सेना में शामिल होने के लिए भारतीय सेना का सर्वोच्च रैंकिंग अधिकारी बनाया। वे युद्ध के मैदान में अपने जीवन का बलिदान देने वाले भारत के सर्वोच्च रैंक सैन्य अधिकारी है। शत्रु की उपस्थिति में विशिष्ट वीरता के कार्यों के लिए उन्हें मरणोपरांत भारत का दूसरा सर्वोच्च सैन्य अलंकरण महा वीर चक्र प्रदान किया गया।

नौशेरा सेक्टर के झांगर क्षेत्र में ब्रिगेडियर उस्मान के नाम पर एक स्मारक उसी स्थान पर बनाया गया है, जहां पर उन्होंने शहादत प्राप्त की थी। हम भारत वासी ब्रिगेडियर उस्मान अली की वीरता और मातृभूमि के लिए बलिदान का सदा करबद्ध स्मरण करते रहेंगे । वे सदा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे!

जय हिन्द, जय हिन्द की सेना

(स्वरचित)

(आरती शर्मा)
वरिष्ठ लेखापरिक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खाद्य, कृषि एवं जल संसाधन), दिल्ली

## भारतीय सेना और उनके मानवाधिकारों का हनन

कश्मीर घाटी में दशकों से पाकिस्तान द्वारा फैलाये गए आतंकवाद से विश्व के सभी देश परिचित है । सीमा पार से आतंवादी भेजने के इलावा घाटी में नौजवानो को गुमराह कर उन्हें जिहाद की ओर धकेलना या उन्हें पत्थर पकड़ाकर अपने ही देश के खिलाफ भड़काना, जैसे घृणित कृत्य पाकिस्तान की देन हैं । ऐसे में आतंकवाद के कदम रोकने के लिए हमारी भारतीय सेना के वीर जवान दिन रात पूरी मुस्तैदी से आतंकवादियों और उनके पाकिस्तान में बैठे आकाओं के नापाक इरादों को नाकाम कर रहे हैं। चाहे वो LOC हो या CASO(सर्च एंड सीज़र ऑपरेशन) हमारे जवान अदम्य जोश और साहस का परिचय देते हुए दुश्मन को परास्त करने में सदा सक्षम रहे हैं । कई बार तो आतंकवादियों से निपटने की कीमत अपने जीवन का बलिदान देकर चुकानी पड़ती है । पर क्या एक आम भारतवासी सचमुच इस शहादत के प्रति संवेदनशील है? क्या वह सचमुच उस बलिदान की कीमत समझता है जिसके कारण वह स्वछंद व बिना किसी भय के जी रहा है। हमारे जवान कितनी प्रतिकूल और अमानवीय स्थितियों में काम कर रहे हैं यह शायद कम ही भारतियों को पता होगा।

ऐसे में हमारे देश के कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी न केवल उनकी वीरता पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं बल्कि आतंकवादियों और उनके ओवरग्राउंड सहयोगियों के प्रति हद से ज़्यादा सहानुभूति दिखाते हैं। यदि कोई आतंकवादी या पत्थरबाज़ सेना की गोली से घायल हो जाता है या मारा जाता है तो बुद्धिजीवियों की यह टोली झट से उनके पक्ष में राग अलापना शुरू कर देती है। दहशतगर्दों के मानवाधिकारों की दुहाई देने वाले ये बुद्धिजीवी क्या ज़रा बताएंगे कि क्या मानवाधिकार सिर्फ इन भारत के टुकड़े करने वाले आतंकवादियों और देशद्रोहियों के लिए हैं । क्या सेना के वीर जवान जो दिन रात अपनी जान जोखिम में डाल कर देश की रक्षा करते हैं उनके लिए कोई मानवाधिकार नहीं हैं।

विगत कुछ वर्षों में आतंकवाद से लड़ते हुए हमारी भारतीय सेना से सम्बंधित इन हृदयविदारक दृष्टांतदर्शक घटनाओ को पढ़कर कोई भी भारतीय सिहर उठेगा ।

1. पाम्पोर, कश्मीर, फरवरी 2016

एक शैक्षिक संस्थान में आतंकवादी दहशतगर्दों ने घुसकर उस ईमारत पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। ऐसे में भारतीय सेना के पैरा स्पेशल फ़ोर्स के जांबाज़ आर्मी ऑफिसर्स कैप्टेन पवन कुमार बेनीवाल और कैप्टेन तुषार महाजन ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, संस्थान में रुके हुए सारे सिविलियन्स को सुरक्षित बाहर निकलने में मदद की जिनको आतंवादियों ने अपनी ढाल बनाया हुआ था । आतंकवादियों को मार गिराकर ये दोनों साहसी ऑफिसर्स स्वंय वीरगति को प्राप्त हुए । इन दोनों बहादुर ऑफिसर्स के पिता जींद (हरियाणा) और उरी(जम्मू) में शिक्षाविद थे । कैप्टेन पवन

कुमार इस ऑपरेशन में भाग लेने से पहले ही घायल थे परन्तु उन्होंने किसी भी प्रकार के मेडिकल अवकाश को लेने से मना कर दिया। क्या किसी ने बमुश्किल आंसू रोके हुए शहीद कैप्टेन पवन कुमार के पिता को अपने इकलौते शहीद पुत्र की ओर से शौर्य चक्र ग्रहण करते हुए देखा है । क्या किसी ने शहीद कैप्टेन तुषार महाजन के पार्थिव शरीर पर बिलख-बिलख कर रोते हुए उनकी माँ को देखा है। स्थानीय कश्मीरी निवासियों के जीवन की रक्षा को सर्वोपरि रखते हुए इन्होने अपना जीवन बलिदान कर दिया ।

2. उरी, जम्मू, सितम्बर 2016

जैशे मोहम्मद के चार आतंकवादियों ने LOC के पास जम्मू कश्मीर के उरी सेक्टर में भारतीय सेना के ब्रिगेड हेडक्वार्टर पर तड़के ग्रेनेड से हमला किया जिसमे सेना के उन्नीस जवान शहीद हो गए और अस्सी से सौ जवान बुरी तरह ज़ख़्मी हो गए । ये दुनिया के किस नीति शास्त्र में विदित है कि सोते हुए निहत्ते सुरक्षाकर्मियों को इतनी निर्ममता और कायरतापूर्ण तरीके से मारा जाए। वे किसी दुश्मन देश पर कब्जाई गयी भूमि नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि की रक्षा में समर्पित थे जो किसी भी धर्म ग्रथ या शास्त्र के अनुसार कर्तव्य परायणता का एक सर्वेश्रेष्ठ उदहारण है । तो फिर ये बर्बरतापूर्ण अमानवीय हमला क्यों हुआ । इसका जवाब शायद किसी भी मानवाधिकार कार्यकर्ता के पास नहीं होगा। न इनके मुख से इस निर्दयी क्रूर हमले के विरुद्ध कोई शब्द बोले जायेंगे । यहां तक कि भारतीय सेना द्वारा द्वारा पाकिस्तान पर किया गए सर्जिकल स्ट्राइक पर भी यह पाखंडी बुद्धिजीवी वर्ग प्रश्नचिन्ह लगाकर देश की जनता के मन में भ्रम पैदा करने का दुस्साहस करता रहा है।

3. नगरोटा, जम्मू, नवम्बर 2016

हैवानियत की चरम सीमा को छूते हुए, तीन जेहादी आतंकवादियों ने उरी हमले के लगभग तीन महीने के बाद जम्मू के पास नगरोटा आर्मी कैंप में सुबह फिर हमला कर दिया l भारतीय पुलिस की वर्दी में इन अमानुषिक आतंकवादियों ने इस बार भारतीय सेना की 166 फील्ड रेजिमेंट पर हमला किया । स्थानीय परिसर में घुसकर इन्होने ए के 47 और ग्रेनेड से हमला किया और दो नवजात, दो महिलाओं और दर्जन सेना के जवानो को बंधी बना लिया । जवाबी कार्यवाही में इन दहशतगर्दों को मौत के घाट उतार दिया पर इस बचाव अभियान में भारतीय सेना के छह जांबाज़ जिनमे बंगाल सेप्पेर्स की 51 एनजीनियर्स रेजिमेंट के मेजर अक्षय गिरीश कुमार भी थे, वीरगति को प्राप्त हुए । अपने नापाक जेहादी मंसूबों को अंजाम देने के लिए, नवजात शिशु तक को बंधक बना लेना एक अमानुषिक घृणित मानसिकता को दर्शाता है । क्या कोई तथकथिरत बुद्धिजीवी या मीडिया कर्मी हमले में शहीद सुरक्षाबलों या उनके परिवारजनों के मूल अधिकारों की सुरक्षा के लिए पाखंडी अलगावादी नेताओ से लड़ेगा या कम से कम घड़ियाली आंसू बहायेगा।

4. हंदवारा, कुपवाड़ा, कश्मीर फरवरी 2017

हरियाणा के महेंद्रगढ़ ज़िले के बहादुर सूरमा मेजर सतीश दहिया (30 राष्ट्रीय राइफल्स) को हाजन ग्राम, हंदवारा में कोर्डोन एंड सर्च ऑपरेशन (CASO) का प्रभार मिला । कोर्डोन करते समय आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी । मेजर दहिया और उनकी टुकड़ी ने जवाबी हमले में तीन आतंकवादियों को मार गिराया। बाकी आतंकवादी भाग खड़े हुए । अपनी जान की परवाह न करते हुए उन्होंने आतंकवादियों का पीछा किया और दो आतंकवादियों को मार गिराया लेकिन जवाबी गोली में उन्हें जांघ और पेट में गोली लगी । जब घायल मेजर दहिया को एम्बुलेंस में बेस हॉस्पिटल श्रीनगर के लिए ले जाया जा रहा था तब पथरबाज़ों की एक टुकड़ी ने एम्बुलेंस का घेराव कर पत्थरबाज़ी करनी शरू कर दी और एम्बुलेंस को लगभग आधे घंटे तक हिलने नहीं दिया । लगभग आधे घंटे बाद

एक आर्मरड (बख्तरबंद ) गाडी ने भीड़ को तितर-बितर किया और मेजर दहिया की एम्बुलेंस को हेलिपैड तक पहुँचाया पर हेलीकाप्टर में उन्हें ले जाने से पहले ही उन्होंने अंतिम सांस ले ली। धिक्कार है ऐसे कायर, धूर्त देशद्रोही पथरबाज़ों और उनके अलगाववादी राजनितिक संरक्षकों पर जिन्होंने एक बुरी तरह ज़ख़्मी सैन्य अधिकारी को प्राथमिक चिकत्सा से वंचित रखा । सेना यदि चाहती तो उन पत्थरबाज़ों पर गोली चला सकती थी पर ऐसा नहीं किया और भटके हुए देशद्रोही नौजवानो ने इसका बदला भारत माँ के एक साहसी सपूत का जीवन छीन कर चुकाया ।

5. श्रीनगर, जून 17

जम्मू कश्मीर पुलिस में डिप्टी सुपरिटेंडेंट ऑफ़ पुलिस के पद पे तैनात अयूब पंडित 23 जून 2017 को जामा मस्जिद के पास सादे कपड़ों में ड्यूटी दे रहे थे कि अचानक कुछ दहशतगर्द शरारती तत्वों ने उन्हें घेर लिया और उनके कपडे फाड़कर उन्हें पास की एक गली में घसीट कर ले गए और लोहे के छड़ों से बेरहमी से पीट पीट कर मार डाला । क्या कसूर था इस पुलिस अफसर का। क्यों मारा गया उसे बेवजह इतनी बेरहमी से। क्या इस निर्मम हत्या से यह सिद्ध नहीं होता कि उनके मानवाधिकारों को बुरी तरह से कुचला गया । पर किसी अलगाववादी नेता ने इसकी भर्त्सना नहीं की।

6. सुंजवान, जम्मू, फरवरी 2018

आतंकवादियों के अमानवीय और कायराना हमलों की श्रंखला में सुंजवान , जम्मू में 36 ब्रिगेड , आर्मी कैंप पर किया गया कायराना हमला भी शामिल है जहां पर फौजी भाई व् उनके परिवार रहते थे। 10 फरवरी 2018 को तड़के सुबह चार बजे ए के 47 और ग्रेनेड से लैस ये जेहादी दहशतगर्द , सेना के आवासीय परिसर में घुसकर अंधाधुंध गोलियां बरसाने लगे जिसमे जम्मू कश्मीर लाइट इन्फेंट्री के चार जवान - सूबेदार मदन लाल चौधरी , हवालदार हबीबुल्लाह कुरैशी , नाइक मंज़ूर अहमद , लांस नौक मोहम्मद इक़बाल और उनके पिता जी शहीद हो गए और नौ अन्य लोग ज़ख़्मी हो गए जिनमे बच्चे व् महिलाएं भी शामिल थें। राइफलमैन नज़ीर अहमद के गर्भवती पत्नी को भी हमले में गोली लगी पर वे सुरक्षित बचा ली गयी। सेना द्वारा चलाये गए फ्लशिंग ऑपरेशन में सारे आतंकवादी मरे गए जो पाकिस्तानी मूल के थे। जिहाद और आतंकवाद को चिंगारी देने वाले छदमी पाखंडी राजनीतिज्ञ क्या ये बताएंगे कि अपने जेहादी मंसूबों को अंजाम देने के लिए सुरक्षाबलों के निहत्ते निरपराध परिवारजनों जिनमे बूढे बच्चे और महिलाएं भी शामिल थे , पर हमला करना दुनिया की किस किताब में लिखा है। दुश्मन द्वारा दिए गए प्रलोभन ने इनको इतना चेतनाशून्य कर दिया है की इन्होंने धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर को नरक बना दिया है।

7. कुलगाम, जून 2017 और पुलवामा जून 2018

नवजात शिशुओं और महिलायों पर हमला जैसे काफी नहीं था कि घिनौने दहशतगर्दों ने मानवता के सभी मापदंडों और अधिकारों को धता बताते हुए सेना के दो कर्त्वय निष्ठ देशप्रेमी अधिकारीयों कुलगाम के रहने वाले 2, राजपुताना राइफल्स के लेफ्टिनेंट उम्र फैज़ और और पुँछ के रहने वाले, 44 राष्ट्रीय राइफल्स के राइफलमैन औरंज़ेब का अपहरण कर उन्हें निर्मम ढंग से मार दिया । ये दोनों अति निंदनीय अपहरण की अलग अलग घटनाएं मई 2017 और जून 2018 को हुईं । इन भारतीय सेना के जांबाज़ों को तब अगवा किया गया जब ये अवकाश पर थें । अगवा कर उन्हें तरह तरह की यंत्रणा दी गयी जिसके बाद उनको गोली मार दे गयी । इतनी निर्ममता पूर्ण हत्या से किसी भी भारतीय का हृदय सिहर उठेगा । क्या ये जघन्य हत्याएं शहीद जांनबाज़ों के मानवाधिकार करके नही हुई।

8. अनंतनाग, अक्टूबर 2018

उत्तराखंड के रहने वाले भारतीय सेना के सिपाही राजेंद्र सिंह एक क्विक रिएक्शन टीम (क्विक रिएक्शन टीम) में शामिल थे जो बॉर्डर रोड आर्गेनाईजेशन (BRO) को सुरक्षा कवर प्रदान कर रही थी । शाम के समय विकृत मानसिकता से ग्रसित देशद्रोही पत्थर बाज़ों ने अनंतनाग बाईपास ,NH 44 पर उनकी गाडी पर पत्थरों से हमला कर दिया । जिसमे एक पत्थर सीधा उन्हें सर पर लगा । उपचार के दौरान, 92 बेस हॉस्पिटल श्री नगर में इस वतन के रखवाले नवयुवक ने वीरगति प्राप्त की । आर्मी ने बादामी बाघ कैंटोनमेंट सेंटर में शहीद राजेंद्र सिंह के इलावा काउंटर इंसर्जेन्सी ऑपरेशन में शहीद दो और जवान हिमाचल प्रदेश के लांस नाइक ब्रजेश कुमार और मिजोराम के सिपोय नगसिआमलियाना को भाव भीनी श्रद्धांजलि दी गयी। क्या अपराध था शहीद राजेंद्र सिंह का ? यही कि वे सड़क विकास में समर्पित BRO के अधिकारीयों की रक्षा कर रहे थे ? क्या सुरक्षा प्रदान करने वाले सेना के जवान पर जानलेवा हमला करना उसके मानवाधिकरों का हनन नहीं है ? सड़क बनने से गाँव, तहसील, ज़िले का संपर्क और बेहतर होता पर गद्दार देशद्रोही पत्थर बाज़ों को ये तक समझ नहीं आया और सेना के रक्षक दाल पर अमानवीय हमला कर दिया ।

आँखें नम हो जाती हैं ऐसे वीर जवानो के अमर बलिदान पर । उपरोक्त दृष्टांत इस बात को स्वतः स्पष्ट करते हैं कि किस तरह जोखिमभरी प्रतिकूल स्थितियों का सामना कर, हमारे समर्पित सशस्त्र बल, हमारे जीवन और मौलिक अधिकारों की रक्षा के प्रति सदा सजग रहते हैं । यह कितना निंदनीय और घृणित कृत्य है कि ऐसी देशभक्त सेना और पुलिस के ऊपर मानवाधिकारों के हनन के झूठे और बेबुनियाद आरोप लगाए जाते हैं । आतंकवादियों और पथरबाज़ों के मानवाधिकार का रोना रोने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी या मीडियाकर्मी क्या ये बताएंगे कि हमारी भारतीय सेना क्या मानवाधिकार की हक़दार नहीं है ? क्या उन्हें सम्मान और गरिमा से जीने और कर्तव्य का निर्वहन करने का कोई हक़ नहीं है। हम एक भारतीय नागरिक होने के नाते अपनी भारतीय सेना के जवानो के मानवाधिकारों के लिए आवाज़ उठाने के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उनके खिलाफ किसी भी तरह के भ्रामक प्रचार या साज़िश को पूरी तरह से नकारते हैं । हमें अपनी भारतीय सेना और सहयोगी पुलिस बलों पर मान है

जय हिन्द जय हिन्द की सेना

(स्वरचित)

(आरती शर्मा)
वरिष्ठ लेखापरिक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खाद्य, कृषि एवं जल संसाधन), दिल्ली

## "हिंदी-पर्यायों के रूप में यथावत ग्रहीत अंग्रेजी शब्द"

1. Agency – एजेंसी
2. Bank - बैंक
3. Bill - बिल
4. Board - बोर्ड
5. Bonus - बोनस
6. Budget – बजट
7. Bureau – ब्यूरो
8. Card - कार्ड
9. Challan – चालान
10. Cheque – चैक
11. Company – कंपनी
12. Compounder - कम्पाउन्डर
13. Conductor - कंडक्टर
14. Coupon - कूपन
15. Driver - ड्राईवर
16. File - फाइल
17. Firm - फर्म
18. Footnote - फुटनोट
19. Gallery - गैलरी
20. Licence - लाइसेंस
21. Label - लेबल
22. Lineman - लाइनमैन
23. Logbook - लॉग-बुक
24. Monitor - मॉनिटर

25. Pad - पैड
26. Package - पैकेज
27. Panel - पैनल
28. Parcel - पार्सल
29. Passbook – पास-बुक
30. Passport - पास-पोर्ट
31. Patent - पेटेंट
32. Photo - फोटो
33. Premium - प्रीमियम
34. Railway - रेलवे
35. Roll No. – रोल न.
36. Tractor - ट्रैक्टर
37. Token - टोकन
38. Visa - वीज़ा
39. Voucher – वाउचर
40. Warrant – वारंट

(राजेश रानल)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

## पिता

पिता धरा है, पिता गगन है,
पिता अपने आप में सर्वगुण संपन्न है
पिता जीवन है, पिता जीवन का उन्नयन है ,
पिता अपने आप में सर्वगुण संपन्न है l

मुश्किल में पिता सरलता की धारा है,
अपनी संतान के लिए पिता सर्वहारा है,
बच्चों की मुस्कान है पिता की मुस्कान,
बच्चा कितना भी बड़ा हो पिता की आँखों का तारा है,
पिता पर वारा जाए मेरा तन, मन, धन है,
पिता अपने आप में सर्वगुण संपन्न है l

पिता ग्रीष्म ऋतु में जैसे शीतल समीर है,
जो थककर भी न थके ऐसा अजर शरीर है ,
विपदा में बन जाए संतान के शीश पर छत्र,
स्वयं लड़ जाए विपदाओं से, पिता ऐसा धीर, वीर है,
ऐसे पिता को मेरा नतमस्तक कोटि-कोटि नमन है,
पिता अपने आप में सर्वगुण संपन्न है l

(स्वरचित)
डॉ. अनुराधा जोशी
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

“यह कविता जिसने भी लिखी प्रशंसनीय है l हिंदी वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग सराहनीय है l”

अ चानक
आ कर मुझे
इ ठलाता हुआ पंछी बोला
ई श्वर ने मानव को तो
उ त्तम ज्ञान-दान से तौला
ऊ पर हो तुम सब जीवों में
ऋ षयः तुल्य अनमोल
ए क अकेली जात अनोखी
ऐ सी क्या मजबूरी तुमको
ओ ट रहे होठों की शोख़ी
औ र सताकर कमजोरों को
अं ग तुम्हारा खिल जाता है
अः तुम्हे क्या मिल जाता है
क हा मैंने – कि कहो
ख ग आज सम्पूर्ण
ग र्व से कि – हर अभाव में भी
घ र तुम्हारा बड़े मजे से
च ल रहा है
छो टी सी - टहनी के सिरे की
ज गह में, बिना किसी के
झ गडे के, न ही किसी
ट कराव के पूरा कुनबा पल रहा है
ठौ र यहीं है उसमे
डा ली-डाली, पत्ते-पत्ते
ढ लता सूरज तरावट देता है
थ कावट सारी, पूरे
दि वस की तारों की लड़ियों से
ध न-धान्य की लिखावट लेता है
ना दान-नियती से अनजान अरे

प्र गतिशील मानव
फ रेब के पुतलों
ब न बैठे हो समर्थ
भ ला याद कहाँ तुम्हें
म नुष्यता का अर्थ ?
य ह जो थी, प्रभु की
र चना अनुपम...
ला लच लोभ के
व शीभूत होकर
श र्म-धर्म सब तजकर
ष ड्यंत्रों के खेतों में
स दा पाप बीजों को बोकर
हो कर स्वयं से दूर
क्ष णभंगुर सुख में अटक चुके हो
त्रा स को आमंत्रित करते
ज्ञा न-पथ से भटक चुके हो l

अंग्रेजी वर्णमाला का बहुत कुछ पढ़ा है,
पहली बार हिंदी में सुन्दर प्रयोग है l

(राजेश रानल)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

## दोस्ती की जरूरत

ज़िन्दगी रास्तों पे ना काँटे बोती
मौत रोज़ अपनी सेज पर जा के सोती
पुष्पों पर सज जाते ओस के मोती
पत्थरों के पूजने से फ़रियाद जो पूरी होती
मौत अगर ले के संग धुन में गाती
ये सुभा जग में न अकेले होती
रात पत्थर पर आराम से सोती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज ना होती...
रूठते जब अपने, टूटते ये सपने
अहम् तब तिरस्कार में जीती
ज़िन्दगी के पलों में स्मृति एक छिपा हुआ पुरस्कार होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज ना होती...
अनजान पलों में, बेतुके हलो में
प्रश्न चिन्हों में भी कोइ तकरार न होती
मन मस्तिष्क की उलझनों में
ऐसे समय की रुकी हुई, एक सरकार न होती
और अक्ल के बंद पड़े तालों की, ये किवाड़ न होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज ना होती...
काँटों के सेज पर आंसुओं की खेप पर
और खाली जेब पर, अपनों की कोई तीमार होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की दरकार ना होती...
असमंजस को मझधार में, अपूर्ण से व्यवहार में
आशाओं की डोलती नैया, अगर बीमार न होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की दरकार ना होती...
न बीतने वाली रातों का जो पहर होती
लोगों की बातें न जहर होती
और दुनिया आफतों का कहर न होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज़ ना होती...
सीधे-साधे रिश्तों में अदृश्य, कटु सी दीवार न होती
उलझाने समेटने का, दिल की कड़ी समेटने का

दुनिया अगर ऐसा औज़ार होती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज़ ना होती...
मन की उलझन में जल जाती ज्योति
सुलझे हुए रिश्ते बन जाते मोती
सुन लेता कोइ हमारी आप बीती
दिन ढलने पर बातें जो रोज़ न होती
शाम ये वीरान न होती, ज़िन्दगी रास्ते में न काँटे बोती
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की दरकार ना होती...
तो शायद ज़िन्दगी में दोस्ती की आगाज़ ना होती...

स्वरचित
(धर्मवीर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (लेखापरीक्षा दल)
कार्यालय महानिदेशक (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
नई दिल्ली – 110002

## इंसानियत

अगर साँसों का चलना ही ज़िन्दगी है तो ज़िंदा हैं हम
मर गई इंसानियत तो क्या फिर भी इंसान हैं हम?

जब हो रही थी खरीद-फरोख्त साँसों की बाज़ारों में
तब भरकर साँसें बर्तन में बेचने वाले इंसान थे क्या हम?

जब मर रहे थे कुछ बीमारी से और कुछ लाचारी से
तब घर में अपने सामान इकट्ठा करने वाले क्या इंसान थे हम?

जब लुट रही थी इज्जत हर सड़क चौराहे पर
तब सिर्फ मंज़र का नज़ारा करने वाले क्या इंसान थे हम?

हैवान है सच्चा जो हैवानियत करके हैवान कहलाता है
इंसान तो हैवानियत करके इंसान होने का भरता है दम

पढ़ते थे कहानी में जिन इंसानी फरिश्तों की वफादारी
आज इंसान निभाते हैं वही सब करके अदाकारी

फिर भी सब्र है थोडा कि कुछ की पेशानी पर आज भी औरों के मातम की सिलवटें हैं
लगता है कुछ चलते-फिरते जिस्मों में आज भी इंसानियत भरती है दम

अगर साँसों का चलना ही ज़िन्दगी है तो ज़िंदा हैं हम
मर गई इंसानियत तो क्या फिर भी इंसान हैं हम?

(स्वरचित)
(वेद प्रकाश)
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
आवासीय लेखापरीक्षा दल, नई दिल्ली
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

# बरसात

बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

ये यौवन ये ताकत ये दौलत की खुमारी
नहीं रुकता कुछ भी किसी की उम्र सारी

जो आया था वो चला गया
बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

करता रहा इकट्ठा चाहे सामान या जज़्बात थे
ये न समझा की वो सब दो पल के लिए साथ थे

सब बिखर गया या सब छूट गया
बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

गिरती बूंदे भी कुछ सिखा गयी
धीरे से कान में एक दस्तक दे गयी
बहता पानी सब बहा तो गया
साथ ही नवीन रास्ता बना जीवन में ऊर्जा का संचार दे गया

न रुक न ठहर न शोक मना
एक दरवाजा बंद तो दूसरा खोल गया
बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

हे मानुष न केवल गरज, तू बरस भी
जिव्हा की शैली के शोर संग तू "कर" से कर्म कर भी
जैसे मेघ बिजली की चमक के साथ बरस भी गया
बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

पूछा उसने सब बहने को है या कुछ रोकने को भी रह गया
रोककर अपने क्रोध, लालच, ईर्ष्या, द्वेष को

अविरल धारा संयम, उदारता, प्रेम की बहा गया

बरसता पानी भी क्या खूब सीख दे गया
रुकने के लिए नहीं कुछ, सब बह गया

(स्वरचित)
(वेद प्रकाश)
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
आवासीय लेखापरीक्षा दल, नई दिल्ली
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

# सुन्दर वचन

1. हमें कितने लोग पहचानते हैं इसकी अहमियत नहीं,
   मगर क्यों पहचानते हैं इसकी अहमियत है l
2. घमंड के अन्दर सबसे बुरी बात ये होती है कि,
   वो आपको महसूस नहीं होने देगा कि आप गलत है l
3. लोग कहते हैं कि पैसा रखो बुरे वक़्त में काम आयेगा,
   मैं कहती हूँ ईश्वर पर यकीन रखो बुरा वक़्त ही नहीं आयेगा l
4. नीयत से ईश्वर खुश होते हैं और दिखावे से इंसान,
   यह आप पर निर्भर करता है कि आप किसे प्रसन्न करना चाहते हैं l
5. कदम ऐसे रखो कि निशाँ बन जाएं,
   काम ऐसे करो कि पहचान बन जाए,
   ज़िन्दगी ऐसे जियो कि मिसाल बन जाए l
6. जो लोग अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहते हैं,
   सफलता खुद चलकर उनके पास आती है l
7. इंसान कर्म करने में तो अपनी अनमनी कर सकता है,
   परन्तु----------फल भोगने में नहीं l
8. जहाँ एक निराशावादी व्यक्तिकिसी भी कार्य में उसका दुष्परिणाम ढूंढता है,
   वहीं आशावादी व्यक्ति हर कठिन कर्म में भी एक अवसर ढूंढ ही लेता है l
9. मैं में इंसान को इंसान नहीं दिखता,
   जैसे यदि चाट पर चढ़ जाओ तो अपना ही मकान नहीं दिखता l
10. घमंड किसी का भी नहीं रहता,
    टूटने से पहले गुल्लक को भी लगता है कि सारे पैसे उसी के हैं l
11. मालूम सबको है कि ज़िन्दगी बेहाल है,
    लोग फिर भी पूछते है – और सुनाओ क्या "हाल" हैं l
12. चीज़ों की कीमत मिलने से पहले होती है,
    और इंसानों की खोने के बाद l
13. सिर्फ "दिखावे" के लिए अच्छा मत बनो,
    वो परमात्मा आपको "बाहर" से नहीं बल्कि "भीतर" से जानता है l
14. मदद मांगने जाओ तो टालते हैं लोग,
    कुछ बात पता चल जाए तो उछालते है लोग,
    बताना मत किसी को अपने घर का हाल ऐ दोस्त !
    अक्सर मौके का फायदा उठा लेते है लोग l
15. परवाह करने वाले ढूंढिए,

इस्तेमाल करने वाल;ए आपको स्वयं ढूंढ लेंगे l

16. शब्द एक मंजन की तरह है जो खुद को अच्छा ना लगे,
    दूसरों को भी मत परोसिए l
17. लोग जो पत्थर आप पर फेंकते हैं,
    उसी से सफलता की इमारत बना लो l
18. जीभ पर लगी चोट जल्दी ठीक हो जाती है,
    परन्तु, जीभ से लगी चोट कभी नहीं भरती l

(स्वरचित)

(सतिंदर कौर)
पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

## महामारी और मानसिक स्वास्थ्य

वर्ष 2019 के अंत एवं वर्ष 2020 के आरम्भ से विश्व को एक नई महामारी का सामना करना पड़ रहा है l इस विषय पर इंटरनेट पर बहुत कुछ लिखा गया । अनेकों विचार प्रकट किए गए l वर्ष 2020 के मध्य से पहले ही इस महामारी ने पूरे विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया l सब इसके नाम से परिचित हो गए l विश्व भर से विषादपूर्ण समाचार प्राप्त होने लगेl हर तरफ केवल रोष ही रोष दिखने लगा l

जहाँ एक ओर महामारी अपने विराट रूप में बढ़ती जा रही थी, दूसरी तरफ मानसिक तनाव, रोष, कलह अनदेखे शत्रु की भाँती प्रहार कर रहा थे l समाचारों में महामारी के प्रकोप के साथ-साथ एक अन्य समाचार बारम्बार आने लगे l यह समाचार थे आत्महत्या के l आत्महत्या के समाचारों की आवृति इतनी अधिक हो गयी कि महामारी का प्रभाव और अधिक बढ़ गया l

ऐसे समय में मानसिक स्वास्थ्य की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया l महामारी के कारण अनेकों जन बेरोजगार हुए, अनेकों बालक अनाथ हुए, लॉकडाउन के कारण अकेलापन बढ़ा गया, ये सभी आत्महत्या के कारण बने गए l इन सभी कारणों का मुख्य आधार मानसिक अस्वस्थता रही l

मानसिक स्वास्थ्य जिसके प्रति हमारे समाज में अनदेशी की जाती रही है, इस कठिन समय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया है l अक्सर देखा गया है कि मनोचिकित्सक के बारे में चर्चा करना भी समाज में आपकी छवि पर शंका उत्पन्न करता है l मनोचिकित्सक के पास आना-जाना और आम चिकित्सक के पास जाने में अंतर देखा जाता है। हम शारीरिक स्वास्थ्य को महत्व देते हैं परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की कुंजी को ही अनदेखा कर जाते है। यदि सिरदर्द की भी शिकायत हो तो दवाई लेने से झिझक नहीं होती लेकिन रोष, निराशा आदि रोगों को पूर्णतः अनदेखा किया जाता है क्योंकि इनका इलाज करवाने पर मानसिक स्थिति पर प्रश्न उठाए जाते हैं।

आज के कठिन समय में हमें यह धारणा छोड़कर सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिकल्पना अपनानी होगी। उत्तम शारीरिक स्वास्थ के लिए मानसिक स्वास्थ्य अनिवार्य है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए जीर्ण होती अवधारणाओं का त्याग ही एकमात्र उपाय है।

(स्वरचित)
(आरती)
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

## अभिव्यक्ति है भाषा

सोचा है कभी भावों का रूप बनता कैसे?
मन की अभिव्यक्ति होती ही कैसे?
भावनाओं की अनुभूति को शब्द देती है भाषा
मूक भावों की वाणी बनती है भाषा
सागर की लहरों के समान संगीत की तरंग
बनती है भाषा।

नाम तो बहुत बन गए आज,
जो शब्द ही न होते तो कैसे पाते पहचान?
देश-विदेश जाकर भी रह जाते अनजान
जो भाषा न देती भावों को प्राण
सागर की लहरों के समान संगीत की तरंग
बनती है भाषा।
पहचान हमारी बनती है भाषा
समाज का आइना दिखाती है भाषा
नए समाज का निर्माण
असंभव है बिन भाषा
सागर की लहरों के समान संगीत की तरंग
बनती है भाषा।

(स्वरचित)
(आरती)
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

## हिंदी पखवाडा उदघाटन समारोह 2021

उद्घाटन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए महानिदेशक महोदया

उद्घाटन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए उप-निदेशक (प्रशासन) महोदय

उद्घाटन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए उप-निदेशक (आर.एंड टी.एच.) महोदय

उद्घाटन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए उप-निदेशक (इन्फ्रा-I) महोदय

उद्घाटन समारोह के अवसर पर महानिशक महोदया का स्वागत करते हुए उप-निदेशक (प्रशासन) महोदय

हिन्दी पखवाड़ा उदघाटन समारोह (हिंदी दिवस) के अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण करते हुए अधिकारीगण

हिन्दी पखवाड़ा उदघाटन समारोह (हिंदी दिवस) के अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण करते हुए अधिकारीगण/कर्मचारीगण

हिन्दी पत्रिका 'संवाद' की संपादकीय समिति

बाएं से दाएं – डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक (सदस्य), श्रीमती सतिंदर कौर, पर्यवेक्षक (सदस्य), श्री मनोज मलिक, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक), श्री नितिन नैनवाल, डीईओ ग्रेड-बी (सदस्य)

हिन्दी पखवाड़ा उदघाटन समारोह (हिंदी दिवस) के अवसर पर वार्षिक पत्रिका 'संवाद' का विमोचन करते हुए अधिकारीगण

महानिदेशक महोदया एवं उच्च अधिकारीगण

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
ए-विंग, तृतीय तल, आई. पी. भवन, नई दिल्ली-110002
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (INFRASTRUCTURE), DELHI
'A' WING, 3rd FLOOR, I. P. BHAWAN, NEW DELHI-110002

*"हिंदी हमारी मातृभाषा है,*
*इसे हर दिन बोलें ।*
*सबको हिंदी में बोलने के लिए उत्साहित करें ।"*

"टिप्पणियाँ हिंदी में लिखें ।
मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए ।
शब्दों के प्रयोग के लिए अटकिये नहीं ।
अशुद्धियों से घबराइये नहीं ।
अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।"

*"भारत के विकास में*
*हिंदी का योगदान अति महत्वपूर्ण है ।*
*यदि हम भारत को*
*विकसित देश के रूप में देखना चाहते हैं*
*तो हिंदी के महत्व को हम सबको समझना होगा ।"*

# भारत निर्माण की ओर,
# नए युग का दौर..!

हमें विनिर्माण क्षेत्र का निर्माण करने की जरूरत है।

## मैं दुनिया को बताना चाहता हूँ,
## आओ, भारत में बनाने के लिए